Indian Scholar
ISSN 2350-109X
www.indianscholar.co.in
An International Multidisciplinary Research e-Journal

भारतीय खेल प्रबन्धन पर खिलाड़ियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

नवल किशोर
शोधार्थी
भगवन्त विश्वविद्यालय अजमेर
(राजस्थान)

संसार के समस्त देखे जाने वाले तथा सुने जाने वाले जीवधारियों में केवल मनुष्य ही सबसे अधिक शिक्षणीय है। ऐसा इसलिए है क्योंकि केवल मनुष्य को ही प्रकृति ने प्रज्ञा (बुद्धि) के जन्मजात उपकरण–एक अतिश्रेष्ठ मस्तिष्क तथा जटिल तन्त्रिका तंत्र प्रदान किए है। अन्य जीव–जन्तुओं की भांति मनुष्य की सहजात व्यवहार जिसमें–निसर्ग, संवेग, सहजाक्रियाएं आदि आते है– के साथ जन्म लेता है जो केवल उसकी उत्तर जीविता में सहायक होता हैं किन्तु जीवधारियों की तुलना में मनष्य अपने निसर्गो का दास नही है। जन्मोपरान्त जैसे–जैसे मनुष्य अपने वातावरण के साथ अन्तक्रिया करता है, वैसे–वैसे न केवल वह अपने जन्मजात, (स्वाभाविक) व्यवहार को संपरिवर्तित तथा परिष्कृत करना सीखता है, प्रत्युत अनेक नई व्यवहार प्रणालियों–उदाहरणतः नानाविध कौशल्य, ज्ञान, प्रवृत्तियां, औपचारिकताएं, व्यावहारिकाएं आदि का भी उपार्जन करता ह। इसे शिक्षण का नाम दिया जाता है। इसी से वास्तव में मनुष्य (पशु) से एक मानव बनता है तथा जीव–जन्तुओं से अपने आपको अलग करता हैं। यह कोई रहस्य नहीं कि पशुओं की तुलना में मनुष्य वास्तव में बहुत कुछ सीखते है तथा जीवन पर्यन्त सीखते रहते है। शिक्षण शिक्षा का मूलाधार है। सच्चे अर्थो में शिक्षण के अभाव में शिक्षा सम्पन्न हो ही नहीं सती। जैसे–जैसे हम कुछ सीखते है, वैसे–वैसे हम अपने आपको शिक्षित करते है। यह एक शाश्वत प्रक्रिया है जिसका कोई छोर नही होता । समस्त जीवन में कुछ– न –कुछ अवश्य सीखते रहते है। यदि न शिक्षण होता और न ही शिक्षा, तो मनुष्य पशुवत ही रहता। शिक्षा एक सुसंस्कृत व्यक्ति का आभूषण होती है।

न तो शिक्षण की अन्तिम रेखा है और न शिक्षा की कोई सीमा। हम जो कुछ भी करते है (अथवा जो कुछ हम से कराया जाता है)–औपचारिक अथवा अनौपचारिक रूप से–वह शिक्षा का ही एक अंश होता है बशर्ते कि वह हमारे पूर्व व्यवहार से किसी न किसी रूप में भिन्न हो। शैशव काल में प्रथम शब्द का उच्चारण सीखने से लेकर आगे चलकर जीवन में एक वैज्ञानिक अथवा विद्वान बनने तक या फिर हाथों, पैरों पर बचपन में ठुमक–ठुमक चलने से लेकर युवावस्था में मोटर साईकिल चलाने तक की क्रिया–प्रक्रियाएं सीखना शिक्षा की परिधि में आता है। शिक्षा प्रक्रिया विद्यालय के कक्षा सदन की दीवारों तक हीह सीमित नहीं होती, यह एक सर्वव्यापक संघटना है जो मनुष्य को आचार, विचार, व्यवहार, कृत्य कार्य आदि में प्रवीण से प्रवीणतर बनाती है। शिक्षा की प्रक्रिया का आरम्भ वास्तव में घर से ही होता है। जब माँ तथा घर–परिवार के अन्य सदस्य बालक को अलग–अलग प्रकार की बातें सीखाना आरम्भ करते है। जैसे भाषा, शारीरिक तथा मानसिक कौशल्य, पढाई–लिखाई, उछल–कूद, खेल, व्यैक्तिक समस्याओं का समाधान इत्यादि।

यदि हम मनुष्य की वृद्धि–संघटना की ओर दृष्टि डालें तो हमें विश्वास हो जायेगा कि मनुष्य की प्राथमिक शिक्षा वास्तव में विभिन्न प्रकार के गामक कौशल्य से आरम्भ होती है, जिसमें गतिशीलता, सरकना, रेंगना, ठुमकना, बैठना, खडे होना, चलना, भागना, कूदना, फेंकना, प्रहार करना, मारना आदि शामिल है। गामक कौशल्य विकास की सम्पूर्ण प्रक्रिया सुक्रमित है अर्थात एक चीज के पश्चात दूसरी चीज आती है और इस प्रकार बालक विास की सीढियां चढता जाता है। विकास शास्त्री (प्रवीण लोग) इसे गति एवं क्रिया शिक्षा का नाम देते है जिसके माध्यम से शारीरिक बल, गति सुत्यथता, नाविध समन्वयिक क्षमताओं आदि का विकास होता है जो बालक के मानसिक विकास की आधार–शिला का कार्य करती है। मानसिक दृष्टि से सुदृढ़ तथा बौद्धिक दृष्टि से प्रखर होने के लिए बालक को अपनी पेशियों को संचालित (आन्दोलित एवं व्यायामित) करता ही पडेगा,उ आधुनिक शिक्षा शास्त्री इसे बुद्धि का उपकरण (साधन) मानते है।

खेले सामाजिक सच्चाई का एक अंग है तथा राजनीति और अर्थव्यवस्था से जुडी हुई है। ये समाज की शक्ति संरचना से सम्बन्धित है तथा उनके आदर्श को प्रदर्शित करती है। विकसित देशें मे राजनेता, राजनीतिक फायदे के लिए खेलों का प्रयोग करते हैं।

अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर खेले न केवल व्यवसायिक होती है बल्कि उच्च स्तरीय राजनीति से प्रेरित होती है। खेल के साथ जुड़ा होने से वह कई तरह के लाभ उठाते हैं, वे खिलाड़ियों की इमेज का भी फायदा उठाते हैं। इससे उनके छवि, उपयोगिता और अहंकार को बढ़ावा मिलता है।

दूसरी बात यह है कि देश में सामुदायिक एकता बढ़ाने के लिए खेलों का प्रयोग नहीं किया जाता बल्कि राष्ट्रीय–अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रभुता अथवा आर्थिक सम्पन्नता का प्रदर्शन किया जाता है।

भारतीय खेल प्रबन्धन इन्हीं सब बातों से जुड़ा हुआ है वर्तमान समय में भारतीय खेल प्रबन्धन की स्थिति कुछ खेलों में अच्छी है परन्त कुछ खेलों में स्थिति जैसे की वैसे ही बनी हुयी है।

शोध की सीमायें:–

शोधपूर्ण रुप से भारतीय खेलन प्रबन्धन पर किया गया है। शोध में प्रयुक्त प्रश्नावली:– शोध में विभिन्न खेल प्रबन्धनों के विश्लेषण के लिए प्रश्नावली को शोधार्थी द्वारा निर्मित किया गया है, इसकी भाषा सरल रखी गयी है ताकि खेल प्रबन्धन से जुड़े व्यक्ति आसानी से उसे समझ सके।

प्रबन्धन एवं प्रशासन

बोलचाल की भाषा में प्रबन्ध और प्रशासन का एक ही अर्थ लगाया जाता है। परन्तु इतना अवश्य साम्य है कि प्रशासन के साथ प्रबंध की प्रक्रिया संबंधित है। अर्थात प्रबंध की अगली इकाई जो कार्य की योजना को क्रियान्वित करती है, उसे प्रशासन की संज्ञा दी गई है। अतः प्रशासनवह साधन है जिसके द्वारा शासकीय, सामुदायिक, शैक्षणिक और औद्योगिक संगठन या संस्था का कार्य सुचारू रूप से चलाया जाता हैं। इस व्याख्या के आधार पर यह स्पष्ट है कि प्रशासन का संबंध किसी भी संस्था या संगठन के अन्तर्गत प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से काम करने वाले व्यक्तियों के समूह तथा उनकी क्रियाओं से संबंधित है। अर्थात, प्रशासन शिक्षा संबंधी सभी बातों को कार्य रूप में परिणत करता है। यह योजना, निर्देशक, नियंत्रण, निष्पादन, निरीक्षण, शैक्षणिक नीति, विधि पर्यवेखण ओर मूल्यांकन से संबंध रखता हैं। किसी भी कार्यक्षेत्र के प्रशासन द्वारा संगठन अथवा प्रबंध को उसके आदर्श तक पहुचाने का प्रयास है। प्रशासन जितना उच्च कोटि का होता है प्रबंध उतना ही व्यवस्थित रूप से कार्य करता है। जहां पर प्रबंध का सम्बन्ध वस्तुओं

उपकरणों और साधनों से रहता है, वहां प्रशासन का संबंध संगठन अथवा प्रबंध के सदस्यों से रहता है और उनकी गतिविधियों के समन्वय के साथ रहता है।

इसें शोध स्वरूप की प्रक्रिया का अध्ययन किया गया है। इस शोध में शोधार्थी की तैयारी, संरचना व रणनीति के साथ प्रश्नावली जो कि अनुसंधानकर्ता द्वारा विभिन्न खेल से सम्बन्धित व्यक्तियों को सुझाव, विश्लेषण हेतु दी गयी के सम्बन्ध में में विस्तृत विवेचना है। यह वह स्थिति है जब विश्लेषणात्मक विचार–विमर्श लक्ष्यों की प्राप्ति तथा शोध कार्य को पूर्ण करने के लिये किया गया है।

अध्ययन का तरीका –

शोध समस्या के समधान हेतु यह आवश्यक हो जाता है कि इस तरीके व तकनीक को अनुसंधानकर्ता अपने अध्ययन हेतु प्रयोग करें। अध्ययन हेतु किसी निश्चित प्रक्रिया के न होने के कारण यह और भी आवश्यक हो जाता है कि अनुसंधानकर्ता द्वारा अपने शोध हेतु एक व्यवस्थित तथा विश्वसनीय प्रक्रिया को अपनाया जाये।

प्रस्तुत शोध कार्य ''भारतीय''

खेल प्रबन्धन– विश्लेषणात्मक अध्ययन ''मै अनुसंधानकर्ता द्वारा नीरमेटिव सर्वे प्रकार व विश्लेषणात्मक प्रकार से आंकडों को एकत्रित कर शोध समस्या का समाधान किया गया है।

नोरमेटिव सर्वे शोध विधि का अर्थः–

नोरमेटिक सर्वे शोध विधि के द्वारा अनुसंधानकर्ता द्वारा परिस्थितियों, लाभ प्रक्रिया, अभ्यास को स्वयं निर्धारित किया जाता है। यह विधि शारीरिक शिक्षा में अनुसंधान में महत्वपूर्ण भूमिका में है।

जनसंख्या एंव नमून :– शोध कार्य हेतु अनुसंधानकर्ता द्वारा खेल महिला, पुरुष शिक्षक, कोच एंव महिला, पुरुष खिलाडी खेल पत्रकार, राजनीतिज्ञों को लिया गया है इसमें पूरे भारतवर्ष के खेल से सम्बन्धित लगभग 640 व्यक्तियों का चुनाव किया गया।

टेबिलः– नमूनों की संख्या (Strength of Sample)

	पुरुष	महिला	योग
खिलाडी	60	60	120

अनुसंधानकर्ता द्वारा (Lottery Method) का प्रयोग करते हुए पूरे भारतवर्ष से खेल से जुडे सनमानित, व्यक्तियों का चुनाव किया गया इस चुनाव में उम्र की कोई वधिता नहीं रखी यगी यह चुनाव 640 (व्यक्तियों में से 400 व्यक्तियों को परीक्षण के लिए चुना गया इनको प्रश्नावली अलग–अलग प्रकार से पहुंचाई गयी व इनके विश्लेषण, सुझाव को एक साथ एकत्रित कर अनुसंधानकर्ता द्वारा आकड़ों की पुनः एकत्रित करके विश्लेषण किया गया प्रश्नावली को सही ढंग से समझने हेतु हिन्दी व अंग्रेजी में अलग–अलग राज्यों के अनुसार बनाया व व्यक्तियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए दिया गया।

सारिणी प्रतिचयन संख्याः–

	पुरुष	महिला	योग
खिलाडी	50	50	100

आँकडे इकट्ठा करने का तरीका

आँकडो को इकट्ठा करना अनेक परिस्थितियों पर निर्भर करता है जैसे– आँकडें, प्राथमिक स्रोत, नियन्त्रित नमूने (Variables), उपयुक्त परीक्षण की उपलब्धता इत्यादि। अनुसंधानकर्ता द्वारा इस वर्तमान अध्ययन में चार नमूनों को लिया गया है–

- खिलाडी– इसमें देश के उन महिला, पुरुष खिलाडियों को सम्मिलित किया गया है, जिन्होंने ब्लॉक, जिला, राज्य व राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभाग किया हो।

आँकडे इकट्ठा करने का प्रक्रिया– 12

करने की विधि बहुत हद तक भाोद्य समस्या की सिथति पर निभर्र करती है इसलिए आँकडें इकट्ठा करने की विधि उसी प्रकार निर्धारित की जाती है जिस प्रकार अनुसंधान की विधि हेाती है।

शोधाथी द्वारा वर्तमान अध्ययन हेतु ''नॉरमेटिव सर्वे विधि'' (Normative Survey Method) का प्रयोग किया गया है और आँकडों को एकत्रित करने के लिए अनुसंधानकर्ता द्वारा स्वयं चार प्रश्नोत्तरी का निर्माण किया गया है।

आँकडों को एकत्रित करने के लिए प्रश्नोत्तरी को चयनित प्रतिचयन को दिया गया। प्रश्नोत्तरी को देते समय चार वर्गों में प्रतिदर्शी की बाधिता के बंधन को ध्यान में रखा गया। परीक्षण की विधिः– Administration of the Test लॉटरी माध्यम से चयनित प्रतिचयन को सर्वप्रथम भारतीय खेल प्रबन्धन से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी को दिया गयां।

लगभग छः महीने के समय में 400 व्यक्तियों ने प्रश्नावली को डाक या अन्य संचार माध्यमों से अनुसंधानकर्ता तक पहुंचाया। अनुसंधानकता

द्वारा प्रत्येक प्रश्नावली का अध्ययनता पूर्वक विश्लेषणात्मक अध्यन किया गया। विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया तथा प्रत्येक प्रश्नावी के अनुसार आँकडों को बनाकर तैयार किया गया।

6. SCORING OF THE RESPONDED SHEETS (आंकडो का विश्लेषण)

खेल प्रशासन एंव प्रबन्धन का स्वरुप, खेल प्रबन्धन की कार्य प्रणाली एंव विस्तार खेल प्रबन्धन प्रशासन में निर्धारण, खेल प्रबन्धन प्रशासन हेतु सझाव के सम्बन्ध में अनुसंधानकर्ता द्वारा प्रश्नावलियों के सुझावों विश्लेषण का अध्ययन करने फलस्वरुप तालिका का निर्माण किया गया। अनुसंधानकर्ता ने पांच तालिका का निर्माण विश्लेषणात्मक अध्ययन के लिया।

आंकडों को एकत्रित करने का चार्ट (Tabularization of The Data Collected) अनुसंधानकर्ता द्वारा पांच तालिकाओं के विश्लेषणात्मक अध्ययन के फलस्वरुप निम्न प्रकार से आँकडो को एकत्रित किया गया।

1. खेल प्रशसन एवं प्रबन्धन का स्वरुप से सम्बन्धित सकारात्मक प्रश्नों की स्वीकृति एवं आवृत्ति का अध्ययन
2. खेल प्रशासन एवं प्रबन्धन का स्वरुप से सम्बन्धित नकारात्मक प्रश्नों की स्वीकृति एवं आवृत्ति का अध्ययन।
3. खेल प्रबन्धन प्रशासन की कार्य प्रणाली एंव विस्तार से सम्बन्धित प्रश्नों कीी सकारात्मक स्वीकृति एंव आवृत्ति।

4. खेल प्रबन्धन प्रशासन की कार्यप्रणाली एवं विस्तार से सम्बन्धित प्रश्नों की नकारात्मक स्वीकृति एंव आवृत्ति।
5. खेल प्रबन्धन प्रशासन में व्याप्त त्रुटियाँ/कमियाँ से सम्बन्धित प्रश्नों की सकारात्मक स्वीकृति एंव आवृत्ति।
6. खेल प्रबन्धन प्रशासन में व्याप्त त्रुटियाँ/कमियाँ से सम्बन्धित प्रश्नों की नकारात्मक स्वीकृति एंव आवृत्ति।
7. खेल प्रबन्धन प्रशासन हेतु योग्यता निर्धारण सम्बन्धित प्रश्नों की सकरात्मक स्वीकृति एवं आवृत्ति।
8. खेल प्रबन्धन प्रशासन हेतु योग्यता निर्धारण सम्बन्धित प्रश्नों की नकरात्मक स्वीकृतिएवं आवृत्ति।
9. खेल प्रबन्धन प्रशासन हेतु सुझाव से सम्बन्धित प्रश्नों की सकारात्मक स्वीकृति एवं आवृत्ति।
10. खेल प्रबन्धन प्रशासन हेतु सुझाव से सम्बन्धित प्रश्नों की नकारात्मक स्वीकृति एवं आवृत्ति।

SATISTICAL TREATMENT

आँकडो के अध्ययन के लिए निम्नलिखित सांख्यिकीय का प्रयोग किया गया है–

$$\left[\frac{x^2 = N(AB' - A'B)^2}{(A+B)(A'+B')(A+B+A'+B')} \right]$$

जहाँ

$$df = (r-1)(C-1)$$

जहाँ R = पंक्ति

C = कॉलम

इसी के अनुसार, अनुसंधानकर्ता द्वारा आंकडों के बार आलेखों को निर्मित किया गया है।

आँकडे इकट्ठा करने का प्रकार

आँकडो को इकट्ठा करना अनेक परिस्थितियों पर निर्भर करता है जैसे– आँकडें, प्राथमिक स्रोत, नियन्त्रित नमूने (Variables), उपयुक्त परीक्षण की उपलब्धता इत्यादि। अनुसंधानकर्ता द्वारा इस वर्तमान अध्ययन में चार नमूनों को लिया गया है–

- खिलाडी– इसमें देश के उन महिला, पुरुष खिलाडियों को सम्मिलित किया गया है, जिन्होंने ब्लॉक, जिला, राज्य व राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभाग किया हो।

आँकडे इकट्ठा करने की प्रक्रिया विधि बहुत हद तक अनुसंधान समस्या की सिथति पर निभर्र करती है इसलिए आँकडें इकट्ठा करने की विधि उसी प्रकार निर्धारित की जाती है जिस प्रकार अनुसंधान की विधि होती है।

अनुसंधानकर्ता द्वारा वर्तमान अध्ययन हेतु ''नॉरमेटिव सर्वे विधि'' (Normative Survey Method) का प्रयोग किया गया है और आँकडों को एकत्रित करने के लिए अनुसंधानकर्ता द्वारा स्वयं चार प्रश्नोत्तरी का निर्माण किया गया है।

आँकडों को एकत्रित करने के लिए प्रश्नोत्तरी को चयनित प्रतिचयन को दिया गया। प्रश्नोत्तरी को देते समय चार वर्गों में प्रतिदर्शी की बाधिता के बंधन को ध्यान में रखा गया। परीक्षण की विधिः– Administration of the Test लॉटरी माध्यम से चयनित प्रतिचयन को सर्वप्रथम भारतीय खेल प्रबन्धन से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी को दिया गयां।

लगभग छः महीने के समय में 400 व्यक्तियों

ने प्रश्नावली को डाक या अन्य संचार माध्यमों से अनुसंधानकर्ता तक पहुंचाया। अनुसंधानकर्ता द्वारा प्रत्येक प्रश्नावली का अध्ययनता पूर्वक विश्लेषणात्मक अध्यन किया गया। विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया तथा प्रत्येक प्रश्नावी के अनुसार आँकडों को बनाकर तैयार किया गया।

आंकडो का विश्लेषण

खेल प्रशासन एंव प्रबन्धन का स्वरुप, खेल प्रबन्धन की कार्य प्रणाली एंव विस्तार खेल प्रबन्धन प्रशासन में निर्धारण, खेल प्रबन्धन प्रशासन हेतु सझाव के सम्बन्ध में अनुसंधानकर्ता द्वारा प्रश्नावलियों के सुझावों विश्लेषण का अध्ययन करने फलस्वरुप तालिका का निर्माण किया गया। अनुसंधानकर्ता ने पांच तालिका का निर्माण विश्लेषणात्मक अध्ययन के लिया।

आंकडों को एकत्रित करने का चार्ट (Tabularization of The Data Collected) अनुसंधानकर्ता द्वारा पांच तालिकाओं के विश्लेषणात्मक अध्ययन के फलस्वरुप निम्न प्रकार से आँकडो को एकत्रित किया गया।

1– खेल प्रशसन एवं प्रबन्धन का स्वरुप से सम्बन्धित सकारात्मक प्रश्नों की स्वीकृति एवं आवृत्ति का अध्ययन

पुरुष खिलाडियों की सूची (प्रतिचयन)

क्र0सं0	नाम	खेल	प्रवीणता स्तर	राज्य
1.	डा0 जे0एम0एस0 वर्तवाल	वॉलीबाल	राष्ट्रीय स्तर	उत्तराखण्ड
2.	श्री कमल नयन वर्तवाल	फुटबॉल	अन्तर्राष्ट्रीय स्तर	उत्तराखण्ड
3.	श्री शुभम वर्तवाल	फुटबॉल	अन्तर्राष्ट्रीय स्तर	उत्तराखण्ड
4.	डा0 धनेश वर्तवाल	बॉस्केटबाल	उत्तर क्षेत्र	उत्तराखण्ड
5.	श्री दुर्गेश वर्तवाल	हॉकी	उत्तर क्षेत्र	उत्तराखण्ड
6.	श्री राजेश रावत	फुटबाल	उत्तर क्षेत्र	उत्तराखण्ड
7.	श्री योगेन्द्र पहवाल	फुटबॉल	उत्तर क्षेत्र	उत्तराखण्ड
8.	वीर विक्रम पंवार	हैडबाल	उत्तर क्षेत्र	उत्तराखण्ड

9.	श्री अनुप विष्ट	ऐथेलेटिक्स	नेशनल	उत्तराखण्ड
10.	श्री जयकृत भण्डारी	हैडबाल	उत्तर क्षेत्र	उत्तराखण्ड
11.	श्री मुकेश भण्डारी	हॉकी	उत्तर क्षेत्र	उत्तराखण्ड
12.	श्री ऐडविन डिसूजा	फुटबाल	नेशनल स्तर	गुजरात
13.	श्री राजकुमार	वॉलीबाल	नेशनल स्तर	हरियाणा
14.	श्री मानवेन्द्र सिंह	फुटबॉल	उत्तर क्षेत्र	दिल्ली
15.	श्री कृष्णा काण्डियाल	क्रिकेट	उत्तर क्षेत्र	उत्तराखण्ड
16.	श्री मनोज नेगी	तैराकी	नेशनल	दिल्ली
17.	श्री प्रवीन सिंह	कबड्डी	अन्तर्राष्ट्रीय	हरियाणा
18.	श्री अतुल अमारे	क्रिकेट	रणजी	महाराष्ट्र
19.	श्री धर्मेन्द्र मेहता	मुक्केबाजी	अन्तर्राष्ट्रीय	हरियाणा
20.	श्री चारव सिंह	लॉन टेनिस	नेशनल स्तर	थ्बहार
21.	श्री हरपाल सिंह	कबड्डी	नेशनल स्तर	प्ंजाब
22.	श्री हरजीत सिंह	खो–खो	नेशनल स्तर	प्जाब
23.	श्री विरेन्द्र सिंह	मुक्केबाजी	अन्तर्राष्ट्रीय	हरियाणा
24.	श्री राजेन्द्र प्रसाद	क्रिकेट	उत्तर क्षेत्र	उत्तराखण्ड
25.	श्री अर्जुन सिंह	कुश्ती	अन्तर्राष्ट्रीय	प्ंजाब
26.	श्री हरवेन्द्र सिंह	क्रिकेट	अन्तर्राष्ट्रीय	प्जाब

महिला खिलाडियों की सूची (प्रतिचयन)

क्र0सं0	नम	खेल	प्रवीणता स्तर	राज्य
1.	माधुरी	हॉकी	उत्तर क्षेत्र	उत्तराखण्ड
2.	अन्जु चौधरी	क्रिकेट	उत्तर क्षेत्र	उत्तराखण्ड
3.	सुमन गुप्ता	एथलेटिक्स	राज्य स्तर	उत्तर प्रदेश
4.	कवीता कण्डारी	फुटबॉल	राज्य स्तर	उत्तर प्रदेश
5.	योगिता सिंह	कुश्ती	राज्य स्तर	उत्तर प्रदेश
6.	लैला	कबड्डी	राज्य स्तर	उत्तर प्रदेश
7.	पद्मीनी	वालीबाल	उत्तर क्षेत्र	उत्तर प्रदेश

8.	शालनी	एथलेटिक्स	राष्ट्रीय स्तर	हरियाणा
9.	रजिन्दर कौर	क्रिकेट	राष्ट्रीय स्तर	प्ंजाब
10.	श्रेनू	नौकयान	राज्य स्तर	हरियाणा
11.	मीनाक्षी	भारोत्तोलन	राष्ट्रीय स्तर	ग्ुजरात
12.	टलका	क्रिकेट	राष्ट्रीय स्तर	हरियाणा
13.	रोशनी	हॉकी	अन्तर्राष्ट्रीय स्तर	थ्बहार
14.	थ्समरन	मुक्केबाजी	राष्ट्रीय स्तर	ग्ुजरात
15.	मीनाक्षी	एथलेटिक्स	राज्य स्तर	उत्तराखण्ड
16.	क्विता	हॉकी	राज्य स्तर	मध्य प्रदेश
17.	सुप्रिया	योगा	राज्य स्तर	उत्तराखण्ड
18.	रुबी	बैड मिन्टन	राष्ट्रीय स्तर	थ्बहार
19.	प्रीति	वालीबॉल	राज्य स्तर	उत्तराखण्ड
20.	कामीनी धीमान	हॉकी	राष्ट्रीय स्तर	राष्ट्रीय स्तर
21.	शबनम सिंह	क्रिकेट	राष्ट्रीय स्तर	हरियाणा
22.	आराधना	लॉन टेनिस	राज्य स्तर	दिल्ली
23.	ज्योति	हॉकी	राज्य स्तर	थ्बहार
24.	थ्वजेता	नेट बॉल	राज्य स्तर	आन्ध्र प्रदेश
25.	थ्मरन	खो–खो	राज्य स्तर	उडीसा
26.	आकांक्षा	लॉन टेनिस	राज्य स्तर	थ्बहार

भारतीय खेल प्रबन्धनों पर (पुरुष) खिलाडियों का विश्लेषण

1. भारतीय खेल प्रबन्धन के वर्तमान प्रशासन में भारतीय पुरुष खिलाडी सुधार की आवश्यकता पर जोर दिया है।
2. भारतीय खेल प्रबन्धन के वर्तमान स्वरुप से पुरुष खिलाडियों में अत्याधिक रोष व अलगाव है पुरुष खिलाडी इस प्रक्रिया में खेल के हितों के लिए सुधार के हिमायती हैं।
3. पुरुष खिलाडी भारतीय खेलों में अत्याधिक कमियाँ मानते हैं उनके अनुसार भारत में खेलों का प्रबन्धन की प्रक्रिया ही ठीक नहीं है इस ढाँचे में राष्ट्रीय स्तर से ब्लॉक स्तर तक कमियाँ विराजमान हैं, इसी कारण से खेलों की स्थिति भारत में ठीक नहीं है। अपितु कुछ खेलों की स्थिति ठीक है लेकिन वहां पर प्रबन्धीय ढाँचा अच्छी स्थिति में नहीं है।
4. पुरुष खिलाडी वर्तमान खेल के प्रबन्धीय ढाचें में विस्तार पर बल देते हैं।

5. पुरुष खिलाडी खेल प्रबन्धन में पद के अनुरुप योग्य व्यक्ति को बैठाना चाहते हैं इसलिए वे इस हेतु योग्यता के निर्धारण पर बल देते हुए कानून बनाने के पक्ष में है ताकि खेल संघ, एसोसिएशन इसमें मनमानी न कर सके।

6. पुरुष खिलाडी खेल में व्याप्त भ्रष्टाचार से दुःखी है। खिलाडियों की मेहनत का फल खेल संघ एसोसिएशन द्वारा मार लिया जाता है। खिलाडी में रोष है, खेल से संघ, एसोसिएशनों ''संघ'' एसोसिएशनों से खेल '' इस विचार के पक्ष में पुरुष खिलाडी अधिक व भारतीय खेल प्रबन्धन में सुधार हेतु जोर देते हैं, ताकि एक खिलाडी को बेहतर परिणाम के हेतु खेल संघ, एसोसिएशन मदद कर सके।

भारतीय खेल प्रबन्धन पर महिला खिलाडियों का विश्लेषण का निष्कर्ष–

1. भारतीय खेल प्रबन्धन पर महिला खिलाडियों का विश्लेषणात्मक निष्कर्षः–

1. महिला खिलाडी भारतीय खेल प्रबन्धन के प्रशासनिक ढ़ाँचे से सहमत नहीं है। प्रशासनिक ढाँचें में सुधार की आवश्यकता पर महिला खिलाडियों ने जोर दिया है।

2. महिला खिलाडी भारतीय खेल प्रबन्धन के स्वरुप से सहमत नहीं है। महिला खिलाडी वर्तमान भारतीय खेल प्रबन्धन के सारे स्वरुप में ही बदलाव के पक्षधर है।

3. महिला खिलाडी भारतीय खेल की वर्तमान कार्य प्रणाली से सहमत नहीं है, वे इसमें सुधार की अपेक्षा रखती हैं, वे संघ, ऐसासिएशयनों के खिलाडियों के साथ व्यवहार से त्रस्त है। वे संघों द्वारा खिलाड़ियों को कम भुगतान व प्रशिक्षण शिविरों में उचित व्यवस्था व सुविधायें न होने से आहत है। मेहनत खिलाडी करे राज खेल संघों के पदाधिकारी करें, ये महिला खिलाडियों के साथ अन्याय है, इस विश्लेषण पर अनुसंधानकर्ता महिला खिलाडियों के साथ अन्याय है इस विश्लेषण पर अनुसंधानकर्ता महिला खिलाडियों के विश्लेषण अध्ययन के फलस्वरुप पहुंचा है।

4. महिला खिलाडी वर्तमान खेल प्रबन्धन में व्याप्त कर्मियों के लिए वर्तमान संघों के पदाधिकारी की जिम्मेदारी मानती हैं उनका मानना है कि संघ के पदाधिकारी पूर्ण कर्तव्यनिष्ठा जानवही के साथ कार्य नहीं करते, उनका एकमात्र उद्देश्य खिलाडियों द्वारा अजित धन का अपने लाभ के लिए उपयोग करना है।

महिला खिलाडियों का मानना यह भी है कि भारत में दो तीन, खेल संघ महिला खिलाडियों के लिए अच्छा कार्य।

5. महिला खिलाडियों का दृढता के साथ मानना है, कि खेल संघ, एसोसिएशन के शीर्ष पदों पर खिलाडियों को ही विराजमान होना चाहिए, क्योंकि एक खिलाडी ही दूसरे खिलाडियों की आर्थिक, सामाजिक मानसिक, शारीरिक पक्ष को आसानी से समझ सकता है।

महिला खिलाडियों का मानना है कि खेल संघों के प्रमुख पदो पर महिला खिलाडियों को ही होनी चाहिए।

6. महिला खिलाडियों खेल संघों की वर्तमान स्थिति में विस्तार चाहती है ताकि कोई भी खेल संघ हो उसका संगठनात्मक ढाँचा नीवं से ही मजबूत हो।

7. महिला खिलाडियाँ भारतीय खेल प्रबन्धन में वर्तमान न के बराबर महिलाओं की भागेदारी, यहधारिता को बढाकर 65 प्रतिशत चाहती है।

भारत सरकार के खेल मंत्रालय से भारतीय खेल प्रबन्धन में संगठनात्मक ढाँचे को दृढ करने के लिए हस्तक्षेप चाहती है ताकि महिला खेलों की स्थिति को भारतवर्ष में बेहतर किया जा सके।

सन्दर्भ सूची

Bayliss, V.A. (1977): The relationship between Learning-style preference and Reading ultlization. Distt. Abs Int. A, 38,8,1978,4540

Clyne, Roger Dean (1984): Leaning-style preference and Reading Academic of urban Alaskan Native students. Distt. Abs. Int. Vol. 45, No9, 1985, 28 01-A

Davis, C. Lea (1979): Interaction of learning and insturctional styles as relatedto development studies if student achievement.Distt. Abs. Int. A, 40,5,1979,3252

Dayer. P.B. (1967) and Kellgham, T. (1977) are references on Page 91 in Journal of psychological Researchers , 1991 issue

Diskowski, B.H. (1991): The relationship of locus of control, learning syle and effective schools among K-12, principals Distt. Abs, Int., 1992, Vol-53 (1), 30-A

Nice,A. peter(1975): A study of the intercations among the learning-styles of college students, Instructional style and Academic fields related to achivement. Distt. Abs. Int. 1771-A, Vol. 54, No.4, Nov.,1993

Verma, B.P. (1994): Modes and styles of learning of University students as a function of their locus of control Journal of Psychological Res. 1994

Verma, BP (1996): Learning styles of inservice teachers: A study of disciplinary differences The progress of Edu., Vol. 70, No.12, July, 1996

Verma, Saroj (2001): Learning Styles, Study Habits and Study Involvement Across Academic-streams. Preachi Journal of Psycho-Cultural Dimensions (Meerut) Vo 17, No.2., Oct., 2001.

White R.S. (1979): Learning style prefrences of technical Education students.Distt. Abs. Int. A, 40, 10,1980, 5328